Shreemad Bhagawad Geeta: श्रीमद् - भगवद् - गीता

अथ भक्तियोगो नाम द्वादशोऽध्यायः ॥

अर्जुन उवाच ।

एवम् सततयुक्ताः ये भक्ताः त्वाम् परि – उपासते ।

ये च अपि अक्षरम् अव्यक्तम् तेषाम् के योगवित्तमाः ॥ १२ - १॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अर्जुन उवाच	Arjuna Uvaacha	Arjun asked	अर्जुन ने कहा	अर्जुनाने विचारले
एवम्	Evam	thus	पूर्वोक्त प्रकार से	अशाप्रकारे
सततयुक्ताः	Satata-YuktaaH	ever steadfast	निरन्तर आपके ध्यान में लगे रहकर	निरंतर ध्यानात मग्न राहून
ये	Ye	those	जो	जे
भक्ताः	BhaktaaH	devotees	अनन्य प्रेमी भक्तजन	अनन्यप्रेमी भक्तजन
त्वाम्	Tvaam	You	आप सगुणरूप परमेश्वर को	तुला (सगुणरूप परमेश्वराला)
परि – उपासते	Pari-Upaasate	worship	अतिश्रेष्ठ भाव से भजते हैं	उपासना करतात
ये	Ye	those	दूसरे जो	जे
च	Cha	and	और	आणि
अपि	Api	also	ब्रह्म को ही	सुद्धा
अक्षरम्	Aksharam	imperishable	केवल अविनाशी सच्चिदानन्दन	अविनाशी
अव्यक्तम्	Avyaktam	unmanifest	निराकार	निराकार
तेषाम्	Teshaam	of those	उन दोनों प्रकार के उपासकों में	त्यापैकी (त्या दोन प्रकारच्या उपासकांमध्ये)
के	Ke	who	कौन हैं ?	कोण (आहेत ?)
योगवित्तमाः	Yoga-VittamaaH	best versed in Yoga	अति उत्तम योगवेत्ता	उत्तम योगवेत्ते

अन्वय :- अर्जुनः उवाच - (हे भगवन्) एवम् सततयुक्ताः ये भक्ताः त्वाम् परि – उपासते , ये च अपि अव्यक्तम् अक्षरम् (परि – उपासते) तेषाम् (मध्ये) के योगवित्तमाः (सन्ति) ? ॥ १२ - १॥

English translation:-

Arjuna said, "Thus, those ever steadfast devotees who worship You and also those who worship the Imperishable, the Unmanifest, which of these (two types) are best versed in Yoga?"

हिन्दी अनुवाद :-

अर्जुन ने कहा , " इस प्रकार सदा एकनिष्ठ होकर जो भक्त लोग आप की उपासना करते हैं और जो लोक अव्यक्त , अक्षर ब्रह्म की उपासना करते हैं ; उन लोगों में कौन श्रेष्ठतम योगी हैं ?"

मराठी भाषान्तर :-

अर्जुन म्हणाला , " याप्रमाणे निरंतर ध्यानात मग्न राहून जे भक्त तुझ्या विश्वरूपाचे म्हणजेच सगुण ब्रह्माचे भजन करतात आणि जे भक्त अव्यक्त अक्षराची म्हणजेच निर्गुण ब्रह्माची उपासना करतात , त्यापैकी उत्तम योगवेत्ते कोण ?"

विनोबांची गीताई :-

अर्जुन म्हणाला - असे मिसळले कोणी तुज भक्त उपासिती
कोणी अक्षर अव्यक्त योगी ते थोर कोणते ॥ १२ - १॥

श्री भगवान् उवाच

मयि आवेश्य मनः ये माम् नित्ययुक्ताः उपासते ।

श्रद्धया परया उपेताः ते मे युक्ततमाः मताः ॥ १२ - २॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
श्री भगवान् उवाच	Shree Bhagawan Uvaacha	The Blessed Lord replied	श्री भगवान् ने उत्तर दिया	श्री भगवान उत्तरले
मयि	Mayi	on Me	मुझ में	माझ्या ठिकाणी
आवेश्य	Aaveshya	having fixed	एकाग्र कर	एकाग्र करून
मनः	ManaH	mind	मन को	मनाला
ये	Ye	who	जो भक्तजन	जे (भक्तजन)
माम्	Maam	Me	मुझ सगुणरूप परमेश्वर को	मला (सगुणरूप परमेश्वराला)
नित्ययुक्ताः	Nitya-YuktaaH	ever steadfast	निरन्तर मेरे भजन ध्यान में लगे हुए	निरंतर ध्यानात मग्न राहून
उपासते	Upaasate	worship	भजते हैं	भजतात
श्रद्धया	Shraddhayaa	with faith	श्रद्धासे	श्रद्धेने
परया	Parayaa	supreme	अतिशय श्रेष्ठ	श्रेष्ठ
उपेताः	UpetaaH	endowed	युक्त होकर	युक्तचित्त होऊन
ते	Te	these	वे	ते
मे	Me	of Me	मुझ को	मला
युक्ततमाः	Yukta-TamaaH	the best versed in Yoga	योगियों में अति उत्तम योगी	(योग्यांमध्ये) अति उत्तम योगी
मताः	MataaH	(in my) opinion	मान्य हैं	मानले आहेत

अन्वय :- श्री भगवान् उवाच - (हे अर्जुन !) मयि मनः आवेश्य नित्ययुक्ताः (सन्तः) ये परया श्रद्धया उपेताः माम् उपासते ते युक्ततमाः मे मताः ॥ १२ - २॥

English translation:-

The Blessed Lord said, "Those who have fixed their minds on Me, and who, ever steadfast and endowed with supreme faith worship Me – them do I consider best versed in Yoga."

हिन्दी अनुवाद :-

श्री भगवान् ने कहा , " मुझ में मन को एकाग्र कर , निरन्तर मेरे भजन – ध्यान में लगे हुए जो भक्तजन अतिशय श्रद्धा से युक्त होकर , मुझ सगुणरुप परमेश्वर को भजते हैं ; वे मुझ को योगियों में अति उत्तम योगी मान्य हैं ।"

मराठी भाषान्तर :-

श्री भगवान म्हणाले , " माझ्या ठिकाणी मन एकाग्र करुन , निरंतर भजन व ध्यानात स्थिर चित्त झालेले जे भक्तगण अतिशय श्रेष्ठ श्रद्धेने माझ्या सगुण रूपातील परमेश्वराला भजतात ; ते योग्यांमधील अति उत्तम योगी आहेत असे मी मानतो ."

विनोबांची गीताई :- श्री भगवान् म्हणाले -

रोवूनि मन माझ्यांत भजती नित्य जोडिले
श्रद्धेनें भारले माझ्या ते योगी थोर मानितों ॥ १२ - २ ॥

ये तु अक्षरम् अनिर्देश्यम् अव्यक्तम् परि-उपासते ।

सर्वत्र-गम् अचिन्त्यम् च कूटस्थम् अचलम् ध्रुवम् ॥ १२ - ३॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ये	Ye	who	जो पुरुष	जे (पुरुष)
तु	Tu	indeed	परन्तु	परंतु
अक्षरम्	Aksharam	imperishable	अविनाशी सच्चिदानन्दघन ब्रह्म को	अविनाशी
अनिर्देश्यम्	Anir-deshyam	indefinable	अकथनीय स्वरूप	अवर्णनीय
अव्यक्तम्	Avyaktam	unmanifest	निराकार	अव्यक्त
परि-उपासते	Pari-Upaasate	worship	निरन्तर एकीभाव से ध्यान करते हुए भजते हैं	(अशा परब्रह्माची) उपासना करतात
सर्वत्र-गम्	Sarvatra-Gam	omnipresent	सर्वव्यापी	सर्वव्यापक
अचिन्त्यम्	Achintyam	unthinkable	मन-बुद्धि से परे	अचिंत्य
च	Cha	and	और	आणि
कूटस्थम्	Kutastham	unchanging	सदा एकरस रहनेवाले	विकाररहित
अचलम्	Achalam	immovable	अचल	अचल
ध्रुवम्	Dhruvam	eternal	नित्य	स्थिर

अन्वय :-

ये तु अक्षरम् , अनिर्देश्यम् , अव्यक्तम् , सर्वत्र-गम् , अचिन्त्यम् , कूटस्थम् , अचलम् , ध्रुवम् च परि-उपासते ... ॥ १२ - ३॥

English translation:-

Those, indeed, who worship the Imperishable, Indefinable, Omnipresent, Unthinkable, Unchanging, Immovable and Eternal...,

हिन्दी अनुवाद :-

जो लोग , किन्तु निर्देश करने के अयोग्य अर्थात् अनिर्वचनीय , सर्वव्यापी , अचिन्तनीय , आधार चैतन्यरुप से अचल , नित्य , निर्गुण ब्रह्म की उपासना करते हैं .....

मराठी भाषान्तर :-

परंतु जे अव्यक्त , अचिंत्य , अवर्णनीय, सर्वव्यापक , सर्वातीत , अचल , स्थिर आणि अविनाशी अशा परब्रह्माची उपासना करतात ....

विनोबांची गीताई :-

परी अचिंत्य अव्यक्त सर्व-व्यापी खुणेविण

नित्य निश्चळ निर्लिप्त जे अक्षर उपासिती ॥ १२ - ३ ॥

संनियम्य इन्द्रियग्रामम् सर्वत्र समबुद्धयः ।

ते प्राप्नुवन्ति माम् एव सर्वभूतहिते रताः ॥ १२ - ४॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
संनियम्य	Sanniyamya	having well restrained	भली प्रकार से वश में कर	चांगल्याप्रकारे ताब्यात ठेवून
इन्द्रियग्रामम्	Indriya-Graamam	the aggregate of senses	इन्द्रियों के समुदाय को	इंद्रियांना
सर्वत्र	Sarvatra	everywhere	सब में	सर्वांच्या ठिकाणी
समबुद्धयः	Sama-buddhayaH	those who regard equally	समान भाव वाले योगी	समान भाव ठेवणारे
ते	Te	they	वे	ते (योगी)
प्राप्नुवन्ति	Pra-apnuvanti	obtain	प्राप्त होते हैं	येऊन मिळतात
माम्	Maam	Me	मुझ को	मला
एव	Eva	only	ही	केवळ
सर्वभूतहिते	Sarva-Buta-Hite	in welfare of all beings	सम्पूर्ण भूतों के हित में	सर्व प्राणिमात्रांच्या कल्याणात
रताः	RataaH	rejoicing	रत और	मग्न असतात

अन्वय :-

(ये) सर्वभूतहिते रताः , इन्द्रियग्रामम् - संनियम्य , सर्वत्र - समबुद्धयः ते माम् एव प्राप्नुवन्ति ॥ १२ - ४॥

English translation:-

Having restrained all the senses, regarding everything equally, rejoicing in the welfare of all beings, they also reach Me.

हिन्दी अनुवाद :-

सर्वत्र समबुद्धिसम्पन्न होकर , समस्त प्राणियों के कल्याण में युक्त होकर और इन्द्रियों के समुदाय को भली प्रकार वश में करके ; वे योगी मुझ को ही प्राप्त होते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

जे भक्त इंद्रियांना चांगल्याप्रकारे ताब्यात ठेवून , सर्व प्राणिमात्रांच्या कल्याणात तत्पर आणि सर्वांच्या ठिकाणी समान भाव ठेवणारे असतात ; ते योगी मलाच येऊन मिळतात .

विनोबांची गीताई :-

रोधिती इंद्रियें पूर्ण सर्वत्र सम ज़ाणुनी
माझ्याकडे चि ते येती ज्ञानी विश्व - हितीं रत ॥ १२ - ४ ॥

क्लेशः अधिकतरः तेषाम् अव्यक्त आसक्त चेतसाम् ।

अव्यक्ताः हि गतिः दुःखम् देहवद्-भिः अवाप्यते ॥ १२ – ५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
क्लेशः	KleshaH	difficulty	परिश्रम	कष्ट
अधिकतरः	AdhikataraH	greater	विशेष है	जास्त
तेषाम्	TeShaam	of those	उन पुरुषों के साधन में	त्याच्या (पुरुषांच्या साधनात)
अव्यक्त - आसक्त - चेतसाम्	Avyakta – Aasakta- Chetasaam	whose minds are set on the Un-manifested	सच्चिदानन्दघन निराकार ब्रह्म में आसक्ति चित्तवाले	निराकार ब्रह्मात चित्त गुंतलेल्या
अव्यक्ताः	AvyaktaaH	Unmanifest	अव्यक्त विषयक	अव्यक्त (ब्रह्माची)
हि	Hi	for	क्योंकि	कारण
गतिः	GatiH	goal	गति	प्राप्ती
दुःखम्	DuHkham	hard / painful	दुःखपूर्वक	कष्टाने
देहवद्-भिः	Dehavad-bhiH	embodied	देहाभिमानियों के द्वारा	देहधारण करणाऱ्यांना
अवाप्यते	Avaapyate	is reached	प्राप्त की जाती है	प्राप्त होते

अन्वय :-

अव्यक्त - आसक्त - चेतसाम् तेषाम् अधिकतरः क्लेशः (अस्ति तैः) देहवद्-भिः अव्यक्ताः गतिः दुःखम् अवाप्यते हि ॥ १२ – ५ ॥

English translation:-

Greater is their difficulty, whose minds are set on the Unmanifest, for the goal, the Unmanifest, is hard for the embodied to reach.

हिन्दी अनुवाद :-

उन सच्चिदानन्दघन निराकार ब्रह्म में आसक्त चित्तवाले पुरुषों के साधन में परिश्रम विशेष है ; क्योंकि देहधारी मनुष्यों के लिये निर्गुण ब्रह्म विषय की निष्ठा कष्टकर साधनों से प्राप्त होती है ।

मराठी भाषान्तर :-

निराकार ब्रह्मात चित्त गुंतलेल्या त्या पुरुषांच्या साधनेत फार कष्ट आहेत कारण देहधारण करणाऱ्यांना अव्यक्त ब्रह्माची प्राप्ती मोठ्या कष्टाने होते .

विनोबांची गीताई :-

अव्यक्तीं गोविती चित्त क्लेष त्यांस विशेष चि
देहवंतास अव्यक्तीं सुखें बोध घडे चि ना ॥ १२ - ५ ॥

ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य मत्पराः ।

अन् - अन्येन एव योगेन माम् ध्यायन्तः उपासते ॥ १२ - ६॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ये	Ye	who	जो	जे
तु	Tu	but	परन्तु	परंतु
सर्वाणि	SarvaaNi	all	सम्पूर्ण	सर्व
कर्माणि	KarmaNi	actions	कर्मों को	कर्मे
मयि	Mayi	in Me	मुझ में	माझ्यात
संन्यस्य	Sannyasya	renouncing	अर्पण कर	अर्पण करुन
मत्पराः	Mat-paraaH	regarding Me as supreme	मेरे परायण रहनेवाले भक्तजन	मत्परायण (भक्तजन)
अन् - अन्येन	Ana-Anyena	single minded	अनन्य	एकनिष्ठेने
एव	Eva	only	ही	केवळ
योगेन	Yogen	By Yoga	भक्ति योग से	भक्तीयोगाने
माम्	Maam	Me	मुझ सगुणरूप परमेश्वर को	माझी
ध्यायन्तः	DhyaayantaH	meditating	निरन्तर चिन्तन करते हुए	ध्यान करतात
उपासते	Upaasate	worship	भजते हैं	उपासना करतात

अन्वय :-

ये तु मत्पराः (सन्तः) , सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य , (माम्) ध्यायन्तः , अन् - अन्येन योगेन एव माम् उपासते ॥ १२ - ६ ॥

English translation:-

But those who worship Me , renouncing all actions in Me, regarding Me as supreme, meditating on Me with single-minded Yoga.

हिन्दी अनुवाद :-

किन्तु , जो लोग समस्त कर्मों को मुझ में सौपकर , मुझ में निष्ठायुक्त होकर , एकनिष्ठ योग के द्वारा अर्थात् भक्ति से मेरा ध्यान करते हुए उपासना करते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

परंतु जे मत्परायण भक्तजन सर्व कर्मे माझ्या ठिकाणी अर्पण करुन माझे ध्यान करतात ते एकनिष्ठ भक्तीयोगाने माझीच उपासना करतात .

विनोबांची गीताई :-

परी जे सगळीं कर्मे मज़ अर्पूनि मत्पर

अनन्य भक्ति योगानें भज़ती चिंतुनी मज़ ॥ १२ - ६ ॥

तेषाम् अहम् समुद्धर्ता मृत्युसंसार सागरात् ।

भवामि नचिरात् पार्थ मयि आवेशित - चेतसाम् ॥ १२ – ७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
तेषाम्	Teshaam	for them	उन	त्याचा (प्रेमी भक्तांचा)
अहम्	Aham	I	मैं	मी
समुद्धर्ता	Sam-Uda-Hartaa	the saviour	उद्धार करनेवाला	उद्धार करणारा
मृत्युसंसार	Mrutyu-Samsaara	death bound mundane existence	मृत्युरूप संसार	मृत्युरूपी संसार
सागरात्	Saagaraat	from ocean of	समुद्र से	सागरातून
भवामि	Bhavaami	I become	होता हूँ	करतो
नचिरात्	Nachiraat	not ere long	शीघ्र ही	तत्काळ
पार्थ	Paartha	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
मयि	Mayi	in Me	मुझ में	माझ्यात
आवेशित - चेतसाम्	Aaveshita - Chetasaam	of those whose minds are set	चित्त लगानेवाले प्रेमी भक्तों का	चित्त गुंतलेल्या भक्तांचा

अन्वय :-

हे पार्थ ! मयि आवेशित – चेतसाम् तेषाम् मृत्युसंसार सागरात् न चिरात् अहम् समुद्धर्ता भवामि ॥ १२ – ७ ॥

English translation:-

For those whose minds are set on Me, I become the saviour of them from the ocean of death bound Samsaara i.e. death bound existence.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! मुझमें समर्पितचित्त मनुष्यों का मृत्युमय संसार – समुद्र से शीघ्र उद्धार करने वाला मैं ही हूँ ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना , माझ्यात चित्त गुंतलेल्या त्या भक्तांचा , मी मृत्युरुप संसार सागरातून त्वरित उद्धार करतो .

विनोबांची गीताई :-

माझ्यांत रोविती चित्त त्यांस शीघ्र चि मी स्वयें
संसार सागरांतूनि काढितों मृत्युं मारुनी ॥ १२ - ७ ॥

मयि एव मनः आधत्स्व मयि बुद्धिम् निवेशय ।

निवसिष्यसि मयि एव अतः ऊर्ध्वम् न संशयः ॥ १२ - ८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
मयि	Mayi	on Me	मुझ में	माझ्याठायी
एव	Eva	alone	केवल	केवळ
मनः	ManaH	(your) mind	मन को	मन
आधत्स्व	Aadhatsva	(you) fix	लगाओ	ठेव
मयि	Mayi	in Me	और मुझ में ही	माझ्याठायी
बुद्धिम्	Buddhim	(your) intellect	बुद्धि को	बुद्धी
निवेशय	Niveshaya	(you) place	लगाओ	स्थिर ठेव
निवसिष्यसि	Nivasishyasi	(you) shall live	इस के उपरान्त तुम निवास करोगे	(तू) राहशील
मयि	Mayi	in Me	मुझ में	माझ्याठायी
एव	Eva	alone	ही	केवळ
अतः	AtaH	here	इस में	येथून
ऊर्ध्वम्	Urdhvam	after	कुछ भी	पुढे
न	Na	no	नहीं है	नाही
संशयः	SanshayaH	doubt	संशय	संशय

अन्वय :-

मयि एव मनः आधत्स्व , मयि बुद्धिम् निवेशय , अतः ऊर्ध्वम् मयि एव निवसिष्यसि (अत्र) संशयः न ॥ १२ - ८ ॥

English translation:-

Fix your mind on Me alone, place your intellect in Me. You will hereafter live in Me alone, there is no doubt (about this).

हिन्दी अनुवाद :-

और मुझ में ही बुद्धि को लगाओ इस के उपरान्त तुम मुझ में ही निवास करोगे इस में कुछ भी संशय नहीं है ।

मराठी भाषान्तर :-

माझ्यातच मन ठेव , माझ्या ठिकाणीच बुद्धी स्थिर कर असे केल्याने तू त्यानंतर (मृत्युनंतर) माझ्या ठिकाणीच निवास करशील यात जरा सुद्धा संशय नाही .

विनोबांची गीताई :-

मन माझ्यांत तूं ठेव बुद्धि माझ्यांत राख तूं
म्हणजे मग निःशंक मी चि होशील तूं स्वयें ॥ १२ - ८ ॥

अथ चित्तम् समाधातुम् न शक्नोषि मयि स्थिरम् ।

अभ्यासयोगेन ततः माम् इच्छ आप्तुम् धनंजय ॥ १२ - ९ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अथ	Atha	if	यदि तुम	जर
चित्तम्	Chittam	mind	मन को	चित्त
समाधातुम्	Samaa-dhaatum	to fix	स्थापन करने में	स्थिर करण्यास
न	Na	not	नहीं हो	नाही
शक्नोषि	Shaknoshi	You are able	समर्थ	समर्थ
मयि	Mayi	on Me	मुझ में	माझ्यात
स्थिरम्	Sthiram	steadily	अचल	स्थिर
अभ्यासयोगेन	Abhyaasa-yogen	By Yoga of constant practice	अभ्यासरूप योग के द्वारा	अभ्यासयोगाने
ततः	TataH	then	तो	तर
माम्	Maam	Me	मुझ को	मला (ईश्वराला)
इच्छ	Ichchha	wish	इच्छा करो	इच्छा कर
आप्तुम्	Aaptum	To reach	प्राप्त होनेकी	प्राप्त करण्याची
धनंजय	Dhanamjaya	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !

अन्वय :-

हे धनंजय ! अथ मयि स्थिरम् चित्तम् समाधातुम् न शक्नोषि, ततः अभ्यासयोगेन माम् आप्तुम् इच्छ ॥ १२ - ९ ॥

English translation:-

O Arjuna! If you are unable to fix your mind steadily on Me, then seek to reach Me by Yoga of constant practice.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन! यदि तुम अपने मन को मुझ में अचल स्थापन करने में समर्थ नहीं हो; तो अभ्यासरूप योग के द्वारा मुझ को प्राप्त होने की इच्छा करो।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना, जर तू माझ्यात आपले चित्त स्थिर करण्यास असमर्थ असशील तर अभ्यासयोगाने मला (ईश्वराला) प्राप्त करण्याची इच्छा कर .

विनोबांची गीताई :-

ज़ाईल ज़ड माझ्यांत चित्तास करणें स्थिर

तरी अभ्यास योगानें इच्छूनि मज़ मेळवीं ॥ १२ - ९ ॥

अभ्यासे अपि असमर्थः असि मत्कर्मपरमः भव ।

मदर्थम् अपि कर्माणि कुर्वन् सिद्धिम् अवाप्स्यसि ॥ १२ - १० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अभ्यासे	Abhyase	in practice	अभ्यास में	अभ्यासात
अपि	Api	even	भी	जर
असमर्थः	A-samarthaH	not capable	असमर्थ	असमर्थ
असि	Asi	You are	हो	असशील
मत्कर्मपरमः	Matkarma-paramaH	My action as supreme	तो केवल मेरे लिये कर्म करने के ही परायण	माझ्यासाठी कर्म करण्यात परायण
भव	Bhava	be	हो जाओ	हो
मदर्थम्	Madartham	For My sake	इस प्रकार मेरे निमित्त	माझ्यासाठी
अपि	Api	even	भी	केवळ
कर्माणि	KarmaaNi	actions	कर्मों को	कर्मे
कुर्वन्	Kurvan	doing	करते हुए	करण्याने
सिद्धिम्	Sidhdhim	perfection	मेरी प्राप्तिरूप सिद्धि को ही	सिद्धी
अवाप्स्यसि	Avaapsyasi	you shall attain	प्राप्त हो जाओगे	मिळवशील

अन्वय :-

(त्वम्) अभ्यासे अपि असमर्थः असि (चेत्) , मत्कर्मपरमः भव , मदर्थम् कर्माणि कुर्वन् अपि सिद्धिम् अवाप्स्यसि ॥ १२ - १० ॥

English translation:-

If you are unable even to practice (Abhyasa Yoga) then regard My action as Supreme; even by performing actions for My sake, you shall attain Perfection.

हिन्दी अनुवाद :-

अभ्यास में भी यदि असमर्थ हो , तो केवल मेरे लिये ही कर्म करने में परायण हो जाओ । इस प्रकार , मेरे निमित्त कर्मों को करते हुए भी , मेरी प्राप्तिरूप सिद्धि को ही प्राप्त हो जाओगे ।

मराठी भाषान्तर :-

जर तू अभ्यासयोग करण्यासही असमर्थ असशील , तर केवळ माझ्यासाठी कर्म करण्यात तत्पर हो ; माझ्यासाठी कर्मे करण्यानेही तू सिद्धी मिळवशील .

विनोबांची गीताई :-

अभ्यास हि नव्हे साध्य तरी मत्कर्म आचरीं
मिळेल तुज ती सिद्धि मत्कर्म हि करुनियां ॥ १२ - १० ॥

अथ एतत् अपि अशक्तः असि कर्तुम् मद्योगम् आश्रितः ।

सर्वकर्म फलत्यागम् ततः कुरु यतात्मवान् ॥ १२ - ११॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अथ	Atha	now	यदि	जर
एतत्	Etat	this	उपर्युक्त साधन को	हे
अपि	Api	even	भी	ही
अशक्तः	AshaktaH	unable	तुम असमर्थ	असमर्थ
असि	Asi	(You) are	हो	असशील
कर्तुम्	Kartum	to do	करने में	करण्यास
मद्योगम्	Madyogam	the union with Me	मेरी प्राप्तिरूप योग के	माझ्या प्राप्तिरूप योगाचा
आश्रितः	AashritaH	refuged in	आश्रित होकर	आश्रित करून
सर्वकर्म	Sarva-Karma	all actions	सब कर्मों के	सर्व कर्मांच्या
फलत्यागम्	Phala-Tyaagam	renunciation of fruit of	फल का त्याग	फळांचा त्याग
ततः	TataH	then	तो	तर मग
कुरु	Kuru	do	करो	कर
यतात्मवान्	Yattatmavaan	self-controlled	मन और बुद्धि आदिपर विजय प्राप्त करनेवाला होकर	मन व बुद्धी इत्यादींवर विजय प्राप्त करून घेऊन

अन्वय :-

अथ एतत् अपि कर्तुम् अशक्तः असि , ततः यतात्मवान् मद्योगम् आश्रितः (सन्) सर्वकर्म - फलत्यागम् कुरु ॥ १२ - ११॥

English translation:-

If you are unable to do even this, then taking refuge in the union with Me, being self-controlled renounce the fruits of all actions.

हिन्दी अनुवाद :-

यदि मेरी प्राप्तिरूप योग के आश्रित होकर , उपर्युक्त साधन को करने में भी तुम असमर्थ हो ; तो मन - बुद्धि आदिपर विजय प्राप्त कर , सब कर्मों के फल का त्याग करो ।

मराठी भाषान्तर :-

जर हे ही करावयास तू असमर्थ असशील तर मन , बुद्धी इत्यादी वर विजय मिळवून माझ्या योगात सर्व कर्मांच्या फळांचा त्याग कर .

विनोबांची गीताई :-

न घडे हें असें कर्म योग माझ्यांत साधुनी
तरी सर्व चि कर्मांचें प्रयत्नें फळ सोड तूं ॥ १२ - ११ ॥

श्रेयः हि ज्ञानम् अभ्यासात् ज्ञानात् ध्यानम् विशिष्यते ।

ध्यानात् कर्मफलत्यागः त्यागात् शान्तिः अनन्तरम् ॥ १२ - १२॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
श्रेयः	ShreyaH	better	श्रेष्ठ है	श्रेष्ठ
हि	Hi	indeed	क्योंकि	कारण
ज्ञानम्	Dnyaanam	knowledge	ज्ञान	ज्ञान
अभ्यासात्	Abhyaasaat	than practice	मर्म को न जानकर किये हुए अभ्यास से	(मर्म न जाणता केलेल्या) अभ्यासापेक्षा
ज्ञानात्	Dnyaanaat	than knowledge	ज्ञान से	ज्ञानापेक्षा
ध्यानम्	Dhyaanam	meditation	मुझ परमेश्वर के स्वरूप का ध्यान	(मी जो परमात्मा त्याच्या स्वरूपाचे) ध्यान
विशिष्यते	Vishishyate	excels	श्रेष्ठ है	श्रेष्ठ आहे
ध्यानात्	Dhyaanaat	Than meditation	और ध्यान से भी	ध्यानापेक्षाही
कर्म-फलत्यागः	Karmaphala-TyaagaH	renunciation of fruit of action	सब कर्मों के फल का त्याग	सर्व कर्मांच्या फळांचा त्याग (श्रेष्ठ आहे)
त्यागात्	Tyaagaat	from renunciation	त्याग से	त्यागामुळे
शान्तिः	ShaantiH	peace	परम शान्ति होती है	शांती (प्राप्त होते)
अनन्तरम्	Anantaram	immediately	तत्काल ही	तत्काळ

अन्वय :-

अभ्यासात् ज्ञानम् श्रेयः (अस्ति) ज्ञानात् ध्यानम् विशिष्यते ; ध्यानात् कर्मफलत्यागः (विशिष्यते) ; अनन्तरम् त्यागात् शान्तिः (भवति) हि ॥ १२ - १२॥

English translation:-

Better indeed is knowledge than practice, better than knowledge is mediation, better than meditation is renunciation of fruit of action; peace immediately follows renunciation.

हिन्दी अनुवाद :-

मर्म को न जानकर किये हुए अभ्यास से ज्ञान श्रेष्ठ है। ज्ञान से मुझ परमेश्वर के स्वरूप का ध्यान श्रेष्ठ है और ध्यान से भी सब कर्मों के फल का त्याग श्रेष्ठ है ; क्योंकि त्याग से तत्काल ही परम शान्ति होती है।

मराठी भाषान्तर :-

अभ्यासापेक्षा ज्ञान श्रेष्ठ होय , ज्ञानापेक्षा मज परमेश्वर स्वरूपाचे ध्यान श्रेष्ठ आहे . ध्यानापेक्षाही सर्व कर्मांच्या फळांचा त्याग श्रेष्ठ आहे , कारण कर्मफलत्यागाने लवकरच शांती प्राप्त होते .

विनोबांची गीताई :-

प्रयत्नें लाभतें ज्ञान पुढें तन्मयता घडे
मग पूर्ण फल त्याग शीघ्र जो शांति देतसे ॥ १२ - १२ ॥

अद्वेष्टा सर्वभूतानाम् मैत्रः करुणः एव च।

निर्ममः निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी ॥ १२ - १३॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अद्वेष्टा	Adveshtaa	not hating	द्वेष भाव से रहित	द्वेष न करणारा
सर्व-भूतानाम्	Sarva-Bhutaanaam	of all beings	सब भूतों में	सर्व प्राणिमात्रांच्या ठिकाणी
मैत्रः	MaitraH	friendly	स्वार्थ रहित सब का प्रेमी	मित्र भावाने
करुणः	KaruNaH	compassionate	हेतुरहित दयालु है	दयाळू
एव	Eva	also	तथा	तसेच
च	Cha	and	और	आणि
निर्ममः	NirmamaH	without mineness	ममता से रहित	ममत्वरहित
निरहंकारः	Nira-AhaMkaaraH	without egoism	अहंकार से रहित	अहंकाररहित
सम-दुःखसुखः	Sama-DuHkha-SukhaH	balanced in pleasure and pain	सुख दुःखों की प्राप्ति में सम और	सुख दुःखांच्या प्राप्तीमध्ये समान
क्षमी	Kshamii	forgiving	क्षमावान् है अर्थात् अपराध करने वालेको भी अभय देनेवाला है	क्षमाशील

अन्वय :-

(यः) सर्वभूतानाम् अद्वेष्टा , मैत्रः , करुणः च एव , निर्ममः , निरहंकारः, समदुःखसुखः , क्षमी ॥ १२ - १३॥

English translation:-

Not having hatred for any being, friendly and compassionate, free from attachment and egoism, balanced in pleasure and pain and forgiving....

हिन्दी अनुवाद :-

जो पुरुष सब भूतों में द्वेष भाव से रहित स्वार्थ रहित सब का प्रेमी और हेतुरहित दयालु है तथा ममता से रहित अहंकार से रहित सुख - दुःखों की प्राप्ति में सम और क्षमावान् है अर्थात् अपराध करने वाले को भी अभय देनेवाला है ।

मराठी भाषान्तर :-

कोणत्याही प्राण्याचा द्वेष न करणारा , सर्वांचा मित्र असणारा , दयाशील , माझेपणा व मीपणा नसलेला , घमेंड न बाळगणारा , सुखात व दुःखात समभाव असलेला आणि क्षमाशील असा भक्त मला प्रिय असतो .

विनोबांची गीताई :-

कोणाचा न करी द्वेष दया मैत्री वसे मनीं
मी माझें न म्हणे सोशी सुख - दुःखें क्षमा - बळें ॥ १२ - १३ ॥

संतुष्टः सततम् योगी यतात्मा दृढनिःश्चयः ।

मयि अर्पितमनोबुद्धिः यः मद्भक्तः सः मे प्रियः ॥ १२ - १४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
संतुष्टः	SantuShTaH	perfectly content	संतुष्ट है	संतुष्ट
सततम्	Satatam	always	निरन्तर	नेहमी
योगी	Yogee	Yogi (united with Self)	योगी	योगी
यतात्मा	Yataatmaa	self controlled	मन - इन्द्रियोंसहित शरीर को वश में किये हुए है	मन, इंद्रिये व शरीराला ताब्यात ठेवणारा
दृढनिःश्चयः	Drudha-NiHchayaH	having firm conviction	और मुझ में दृढ निश्चयवाला है	दृढ निश्चयी
मयि	Mayi	To Me	मुझ में	माझ्या ठिकाणी
अर्पित-मनोबुद्धिः	Arpita-Mano-BuddhiH	with mind and intellect dedicated	अर्पण किये हुए मन बुद्धिवाला	मन व बुद्धी अर्पण केलेला
यः	YaH	who	तथा जो पुरुष	जो
मद्भक्तः	MadbhaktaH	my devotee	मेरा भक्त	माझा भक्त
सः	SaH	he	वह	तो
मे	Me	to Me	मुझ को	मला
प्रियः	PriyaH	dear	प्रिय है	प्रिय (असतो)

अन्वय :-

यः सततम् संतुष्टः, योगी , यतात्मा , दृढनिःश्चयः , मयि अर्पितमनोबुद्धिः , सः मद्भक्तः मे प्रियः (अस्ति) ॥ १२ - १४ ॥

English translation:-

One who is ever perfectly content, united with Self, self-controlled, having firm conviction, with mind and intellect dedicated to Me, he is my devotee and is dear to me.

हिन्दी अनुवाद :-

तथा जो योगी निरन्तर संतुष्ट है मन इंद्रियोंसहित शरीर को वश में किये हुए है और मुझ में दृढ निश्चयवाला है वह मुझ में अर्पण किये हुए मन-बुद्धिवाला मेरा भक्त मुझ को प्रिय है।

मराठी भाषान्तर :-

जो सदा संतुष्ट असतो , योगाभ्यास करणारा संयमी आणि ज्याची माझ्यावर दृढ श्रद्धा असते आणि ज्याने आपले मन आणि बुद्धी मला (ईश्वराला) अर्पण केली आहे ; असा तो माझा भक्त मला (ईश्वराला) प्रिय असतो .

विनोबांची गीताई :-

सदा संतुष्ट जो योगी संयमी दृढ निश्चयी
अर्पी मज मनो बुद्धि भक्त तो आवडे मज ॥ १२ - १४ ॥

यस्मात् न उद्विजते लोकः लोकात् न उद्विजते च यः ।

हर्षामर्षभयोद्वेगैः मुक्तः यः सः च मे प्रियः ॥ १२ - १५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यस्मात्	Yasmaat	from whom	जिस से	ज्याच्यामुळे
न	Na	not	नहीं	नाही
उद्विजते	Udvijate	is agitated	उद्वेग को प्राप्त होता	उद्वेग वाटतो
लोकः	LokaH	world	कोई भी जीव	जीवाला
लोकात्	Lokaat	from the world	किसी जीव से	जीवामुळे
न	Na	not	नहीं	नाही
उद्विजते	Udvijate	is agitated	उद्वेग को प्राप्त होता	उद्विग्न होतो
च	Cha	and	और	तसेच
यः	YaH	who	स्वयं भी	जो
हर्षामर्ष-भयोद्वेगैः	Harshaa-marsha-Bhayo-DvegaiH	from joy, envy, fear and anxiety	हर्ष अमर्ष भय और उद्वेग आदि से	हर्ष , मत्सर , भय , आणि उद्वेग इत्यादींनी
मुक्तः	MuktaH	freed	रहित है	रहित
यः	YaH	He who	जो	जो
सः	SaH	he	वह भक्त	तो (भक्त)
च	Cha	and	तथा	आणि
मे	Me	To Me	मुझ को	मला
प्रियः	PriyaH	dear	प्रिय है	प्रिय (आहे)

अन्वय :-

लोकः यस्मात् न उद्विजते यः च लोकात् न उद्विजते , यः च हर्षामर्षभयोद्वेगैः मुक्तः , सः मे प्रियः (अस्ति) ॥ १२ - १५ ॥

English translation:-

By whom the world is not agitated and who is not agitated by the world, who is free from joy, envy, fear and anxiety – he is dear to me.

हिन्दी अनुवाद :-

जिस से कोई भी जीव , उद्वेग को प्राप्त नहीं होता और जो स्वयं भी , किसी जीव से उद्वेग को प्राप्त नहीं होता तथा जो हर्ष , अमर्ष , भय और उद्वेग आदि से रहित है ; वह भक्त मुझ को प्रिय है ।

मराठी भाषान्तर :-

ज्याच्यापासून कोणत्याही जीवाला त्रास होत नाही तसेच ज्याला कोणत्याही जीवाचा उबग येत नाही ; जो हर्ष , मत्सर , भीती आणि उद्वेग इत्यादींपासून मुक्त असतो तो भक्त मला प्रिय असतो .

विनोबांची गीताई :-

ज़ो न लोकांस कंटाळे ज्यास कंटाळती न ते

हर्ष शोक भय क्रोध नेणे तो आवडे मज़ ॥ १२ - १५ ॥

अनपेक्षः शुचिः दक्षः उदासीनः गतव्यथः ।

सर्वारम्भपरित्यागी यः मद्भक्तः सः मे प्रियः ॥ १२ - १६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अनपेक्षः	AnapekshaH	free from wants	आकांक्षा से रहित	अपेक्षारहित
शुचिः	ShuchiH	pure	बाहर भीतर से शुद्ध	शुद्ध
दक्षः	DakshaH	dexterous / expert	चतुर	चतुर
उदासीनः	UdaasiinaH	unconcerned	पक्षपात से रहित	तटस्थ
गतव्यथः	GatavyathaH	untroubled	और दुःखों से छूटा हुआ है	दुःखातून मुक्त
सर्वारम्भ-परित्यागी	Sarva-arambha-Parityaagee	renouncer of all undertakings	सर्व आरंभों का त्यागी	सर्व आरंभांचा त्याग करणारा
यः	YaH	he who	जो पुरुष	जो
मद्भक्तः	Mad-BhaktaH	My devotee	मेरा भक्त	माझा भक्त
सः	SaH	he	वह	तो
मे	Me	to me	मुझे	मला
प्रियः	PriyaH	dear	प्रिय है	प्रिय (आहे)

अन्वय :-

यः मद्भक्तः , अनपेक्षः , शुचिः , दक्षः , उदासीनः , गतव्यथः , सर्वारम्भपरित्यागी , सः मे प्रियः (भवति) ॥ १२ - १६ ॥

English translation:-

My devotee, who is free from wants, pure, alert, unconcerned, untroubled, renouncer of all undertakings; is dear to Me.

हिन्दी अनुवाद :-

और जो शत्रु मित्र में और मान अपमान में , सम है तथा सरदी - गरमी और सुख - दुःख आदि द्वन्दों में सम है , और आसक्ति से रहित है ।

मराठी भाषान्तर :-

ज्याला कशाचीही अपेक्षा नाही , जो अंतर्बाह्य शुद्ध , चतुर , तटस्थ आणि दुःखमुक्त आहे ; कर्तृत्वाचा अभिमान न बाळगणारा असा माझा भक्त मला प्रिय असतो .

विनोबांची गीताई :-

नेणे व्यथा उदासीन दक्ष निर्मळ निःस्पृह

सोडी आरंभ जो सारे भक्त तो आवडे मज ॥ १२ - १६ ॥

यः न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्-क्षति ।

शुभ अशुभ परित्यागी भक्तिमान् यः सः मे प्रियः ॥ १२ - १७॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यः	YaH	he who	जो पुरुष कभी	जो
न	Na	not	नही	नाही
हृष्यति	Hrushyati	rejoices	हर्षित होता है	आनंदीत होतो
न	Na	not	नही	नाही
द्वेष्टि	DveShti	hates	द्वेष करता है	द्वेष करतो
न	Na	not	नही	नाही
शोचति	Shochati	grieves	शोक करता है	दुःख करतो
न	Na	not	नही	नाही
काङ्-क्षति	KaaNkshati	desires	कामना करता है	इच्छा वा अपेक्षा करीतो
शुभ	Shubha	good	तथा जो शुभ	शुभ
अशुभ	Ashubha	evil	और अशुभ	अशुभ
परित्यागी	Parityaagii	renouncer	सम्पूर्ण कर्मों का त्यागी है	त्याग करणारा
भक्तिमान्	Bhakti-maanyaH	full of devotion	भक्तियुक्त पुरुष	भक्तियुक्त पुरुष
यः	YaH	he who	जो पुरुष	जो
सः	SaH	he	वह पुरुष	तो
मे	Me	to Me	मुझे	मला
प्रियः	PriyaH	dear	प्रिय है	प्रिय (आहे)

अन्वय :-

यः न हृष्यति , न द्वेष्टि , न शोचति , न काङ्क्षति , यः शुभ - अशुभ - परित्यागी भक्तिमान् (अस्ति) सः मे प्रियः (भवति) ॥ १२ - १७॥

English translation:-

He who neither rejoices nor hates, nor grieves, nor desires, renouncer of good and evil and who is full of devotion ; he is dear to Me.

हिन्दी अनुवाद :-

जो न कभी हर्षित होता है , न द्वेष करता है , न शोक करता है , न कामना करता है तथा जो शुभ और अशुभ सम्पूर्ण कर्मों का त्यागी है ; वह भक्तियुक्त पुरुष मुझ को प्रिय है ।

मराठी भाषान्तर :-

जो कधी आनंदित होत नाही , द्वेष करीत नाही , शोक करीत नाही , कामना करीत नाही तसेच शुभ आणि अशुभ अशा सर्व कर्मांचा त्याग करणारा आहे ; तो भक्तीयुक्त पुरुष मला प्रिय असतो .

विनोबांची गीताई :-

न उल्लासे न संतापे न मागे न झुरे चि जो

बरें वाईट सोडूनि भजे तो आवडे मज ॥ १२ - १७ ॥

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः ।

शीत उष्ण सुख दुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः ॥ १२ - १८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
समः	SamaH	alike	सम है	समान
शत्रौ	Shatrau	in foe	शत्रु में	शत्रूच्या बाबतीत
च	Cha	and	और	व
मित्रे	Mitre	in friend	मित्र में	मित्रांच्या बाबतीत
च	Cha	and	और	आणि
तथा	Tathaa	also	तथा	तसेच
मानापमानयोः	Maanaa-pamanayoH	in honour and dishonour	मान और अपमान में	मान अपमानांच्या मध्ये
शीत	Sheeta	cold	सरदी	थंडी
उष्ण	UShNa	hot	गरमी	उष्णता
सुख	Sukha	joy	और सुख	सुख
दुःखेषु	DuHkheShu	sorrow	दुःखादि द्वन्दों में	दुःख इत्यादी द्वंदांमध्ये
समः	SamaH	alike	सम है	समान
सङ्गविवर्जितः	SaNga-VivarjitaH	entirely free from attachment	और आसक्ति से रहित है	आसक्तिरहित (असतो)

अन्वय :-

(यः) शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः समः , शीत - उष्ण – सुख - दुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः (च अस्ति) ॥ १२ - १८॥

English translation:-

He is alike to friend and foe and also to honour and dishonour, alike to heat and cold, to joy and sorrow, entirely free from attachment.

हिन्दी अनुवाद :-

शत्रु - मित्र में और मान - अपमान में सम है , तथा सरदी - गरमी और सुख - दुःख आदि द्वन्दों में सम है और आसक्ति से रहित है ।

मराठी भाषान्तर :-

जो शत्रू आणि मित्र , मान आणि अपमान , शीत आणि उष्ण , सुख आणि दुःख इत्यादी द्वंद्वात ज्याची वृत्ती सारखीच राहते , जो आसक्तिरहित असतो .

विनोबांची गीताई :-

सम देखे सखे वैरी तसे मानापमान हि

शीत उष्ण सुखें दुःखें करुनि सम मोकळा ॥ १२ - १८ ॥

तुल्य निंदा स्तुतिः मौनी संतुष्टः येनकेनचित् ।

अनिकेतः स्थिर मतिः भक्तिमान् मे प्रियः नरः ॥ १२ - १९॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
तुल्य	Tulya	equal	समान समझनेवाला	समान
निंदा	Nindaa	censure	निन्दा को	निंदा
स्तुतिः	StutiH	praise	और स्तुति को	स्तुती
मौनी	Maunii	silent	मननशील	मननशील
संतुष्टः	SantuShTaH	content	सदा ही संतुष्ट है	संतुष्ट
येनकेनचित्	Yena-kena-chit	with anything	और जिस किसी प्रकार से भी शरीर का निर्वाह होने में	कोणत्याही प्रकाराने
अनिकेतः	AniketaH	homeless	और रहने के स्थान में ममता और आसक्ति से रहित है	घरदाररहित
स्थिर	Sthira	steady	स्थिर	स्थिर
मतिः	MatiH	minded	बुद्धि	बुद्धी
भक्तिमान्	Bhaktimaan	full of devotion	और भक्तिमान्	भक्तिमान
मे	Me	to Me	मुझे	मला
प्रियः	PriyaH	dear	प्रिय है	प्रिय (आहे)
नरः	NaraH	man	वह पुरुष	(तो) पुरुष

अन्वय :-

तुल्य - निंदा - स्तुतिः मौनी , (यः) येन केनचित् संतुष्टः (भवति) , अनिकेतः स्थिर मतिः भक्तिमान् (सः) नरः मे प्रियः (भवति) ॥ १२ - १९॥

English translation:-

To whom censure and praise are equal, silent, content with anything, homeless, steady-minded, the person full of devotion is dear to Me.

हिन्दी अनुवाद :-

निन्दा - स्तुति को समान समझनेवाला मननशील और जिस किसी प्रकार से भी शरीर का निर्वाह होने में सदा ही संतुष्ट है और रहने के स्थान में ममता और आसक्ति से रहित है; वह स्थिरबुद्धि, भक्तिमान् पुरुष मुझ को प्रिय है।

मराठी भाषान्तर :-

निंदा व स्तुती सारखीच मानणारा , ईश स्वरुपाचे मनन करणारा जे काही मिळेल त्यातच नेहमी समाधानी असणारा , घरदार नसणारा व स्थिरबुद्धी भक्तिमान पुरुष मला प्रिय असतो .

विनोबांची गीताई :-

निंदा स्तुति न घे मौनी मिळे तें गोड मानितो
स्थिर बुद्धि निराधार भक्त तो आवडे मज ॥ १२ - १९ ॥

ये तु धर्म्यामृतम् इदम् यथा उक्तम् पर्युपासते ।

श्रद्धधाना मत्परमाः भक्ताः ते अतीव मे प्रियाः ॥ १२ - २० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ये	Ye	who	जो	जे
तु	Tu	indeed	परन्तु	परंतु
धर्म्यामृतम्	Dharmya-amrutam	Immortal dharma (law)	धर्ममय अमृत को	धर्ममय अमृताचे
इदम्	Idam	this	इस	हे
यथा	Yatha	as	उपर	वर
उक्तम्	Uktam	declared	कहे हुए	सांगितलेले
पर्युपासते	Paryupaasate	devoutly practise	निष्काम प्रेमभाव से सेवन करते हैं	प्रेमभावाने सेवन करतात
श्रद्धधाना	Shraddha-dhaanaa	endued with faith	श्रद्धायुक्त पुरुष	श्रद्धायुक्त पुरुष
मत्परमाः	Mat-ParamaaH	regarding Me as supreme	मेरे परायण होकर	मत्परायण होऊन
भक्ताः	BhaktaaH	devotees	भक्त	भक्त
ते	Te	they	वे	ते
अतीव	Ateeva	exceedingly	अत्यन्त	अतिशय
मे	Me	to Me	मुझे	मला
प्रियाः	PriyaaH	are dear	प्रिय है	प्रिय असतात

अन्वय :-

ये तु श्रद्धधाना मत्परमाः भक्ताः इदम् यथा उक्तम् धर्म्यामृतम् पर्युपासते, ते मे अतीव प्रियाः (सन्ति) ॥ १२ - २०॥

English translation:-

They, indeed, who follow this immortal law as declared, endued with faith, regarding Me as supreme – those devotees are exceedingly dear to Me.

हिन्दी अनुवाद :-

परन्तु जो श्रद्धायुक्त पुरुष मेरे परायण होकर इस ऊपर कहे हुए धर्ममय अमृत को निष्काम प्रेमभाव से सेवन करते हैं वे भक्त मुझ को अत्यन्त प्रिय हैं।

मराठी भाषान्तर :-

परंतु जे श्रद्धाळू पुरुष मत्परायण होऊन येथे सांगितल्याप्रमाणे धर्ममय अमृताचे म्हणजेच अमर ज्ञानाचे सेवन करतात; ते भक्त मला अतिशय प्रिय असतात.

विनोबांची गीताई :-

ज़े धर्म - सार हें नित्य श्रद्धेनें मी चि लक्षुनी

सेविती ते तसे भक्त फार आवडती मज़ ॥ १२ - २० ॥

ॐ तत् सत् इति श्रीमद् भगवद् गीतासु उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायाम् योगशास्त्रे

श्रीकृष्णार्जुन संवादे भक्तियोगो नाम द्वादशोऽध्यायः ॥

हरिः ॐ तत् सत् । हरिः ॐ तत् सत् । हरिः ॐ तत् सत् ।

Om that is real. Thus, in the Upanishad of the glorious Bhagwad Geeta, the knowledge of Brahman, the Supreme, the science of Yoga and the dialogue between Shri Krishna and Arjuna this is the twelfth discourse designated as "the Yoga of Devotion".

बाराव्या अध्यायाचा एका श्लोकात मथितार्थ

बरी सगुण भक्ति की भजन निर्गुणाचें बरे ।

पुसे विजय हें तदा हरि वदे तया आदरें ॥

असोत बहु योग हे तरिही भक्तियोगाहुनी ।

नसेचि दुसरा असा सुलभ जो श्रमावाचुनी ॥

गीता सुगीता कर्तव्या किम् अन्यैः शास्त्रविस्तरैः ।

या स्वयम् पद्मनाभस्य मुखपद्माद् विनिःसृता ॥

गीता सुगीता करण्याजोगी आहे म्हणजेच गीता उत्तम प्रकारे वाचून तिचा अर्थ आणि भाव अन्तःकरणात साठवणे हे कर्तव्य आहे . स्वतः पद्मनाभ भगवान् श्रीविष्णूंच्या मुखकमलातून गीता प्रगट झाली आहे . मग इतर शास्त्रांच्या फाफटपसाऱ्याची जरूरच काय ?

- श्री महर्षी व्यास

विनोबांची गीताई :-

गीताई माउली माझी तिचा मी बाळ नेणता ।

पडतां रडतां घेई उचलूनि कडेवरी ॥